PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

वाक्यों का रूपान्तरण

किसी वाक्य में अर्थ परिवर्तन किए बिना उसकी संचरना में परिवर्तन की प्रक्रिया वाक्यों का रूपान्तरण कहलाती है। एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्यों में बदलना वाक्य परिवर्तन या वाक्य रचनान्तरण कहलाता है।

अर्थ में परिवर्तन लाए बिना वाक्य की रचना में परिवर्तन किया जा सकता है। सरल वाक्यों से संयुक्त अथवा मिश्र वाक्य बनाए जा सकते हैं। इसी प्रकार संयुक्त अथवा मिश्र वाक्यों को सरल वाक्यों में बदला जा सकता है। ध्यान रखिए कि इस परिवर्तन के कारण कुछ शब्द, योजक चिह्न या संबंधबोधक लगाने या हटाने पड़ सकते हैं।

वाक्य परिवर्तन की प्रक्रिया में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य का केवल प्रकार बदला जाए, उसका अर्थ या काल आदि नहीं।

वाक्य परिवर्तन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

वाक्य परिवर्तन करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान रखनी चाहिए।
(i)केवल वाक्य रचना बदलनी चाहिए, अर्थ नहीं।
(ii)सरल वाक्यों को मिश्र या संयुक्त वाक्य बनाते समय कुछ शब्द या सम्बन्धबोधक अव्यय अथवा योजक आदि से जोड़ना।
जैसेक्योंकि -, कि, और, इसलिए, तब आदि।
(iii)संयुक्तमिश्र वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलते समय योजक शब्दों या सम्बन्धबोधक अव्ययों का / लोप करना।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

(1)सरल वाक्य- अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।
संयुक्त वाक्य- वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।

(2)सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।
संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

(3)सरल वाक्य- गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।
संयुक्त वाक्य- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(4)सरल वाक्य- पैसा साध्य न होकर साधन है।
संयुक्त वाक्य- पैसा साध्य नहीं है, किन्तु साधन है।

(5)सरल वाक्य- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदरसत्कार होता है।-
संयुक्त वाक्य- उसमें गुण थे इसलिए उसका सब जगह आदरसत्कार होता था।-

(6)सरल वाक्य- दोनों में से कोई काम पूरा नहीं हुआ।
संयुक्त वाक्य- न एक काम पूरा हुआ न दूसरा।

(7) सरल वाक्य- पंगु होने के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।
संयुक्त वाक्य- वह पंगु है इसलिए घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

(8) सरल वाक्य- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।
संयुक्त वाक्य- परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।

(9) सरल वाक्य- रमेश दण्ड के भय से झूठ बोलता रहा।
संयुक्त वाक्य- रमेश को दण्ड का भय था, इसलिए वह झूठ बोलता रहा।

(10) सरल वाक्य- वह खाना खाकर सो गया।
संयुक्त वाक्य- उसने खाना खाया और सो गया।

(11) सरल वाक्य- उसने गलत काम करके अपयश कमाया।
संयुक्त वाक्य- उसने गलत काम किया और अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।
सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

(2)संयुक्त वाक्य- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे।
सरल वाक्य- जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे।

(3)संयुक्त वाक्य- वह धनी है पर लोग ऐसा नहीं समझते।
सरल वाक्य- लोग उसे धनी नहीं समझते।

(4)संयुक्त वाक्य- वह अमीर है फिर भी सुखी नहीं है।
सरल वाक्य- वह अमीर होने पर भी सुखी नहीं है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(5)संयुक्त वाक्य- बाँस और बाँसुरी दोनों नहीं रहेंगे।
सरल वाक्य- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(6)संयुक्त वाक्य- राजकुमार ने भाई को मार डाला और स्वयं राजा बन गया।
सरल वाक्य- भाई को मारकर राजकुमार राजा बन गया।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1)सरल वाक्य- उसने अपने मित्र का पुस्तकालय खरीदा।
मिश्र वाक्य- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मित्र का था।

(2)सरल वाक्य- अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।
मिश्र वाक्य- जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते हैं।

(3)सरल वाक्य- लोकप्रिय कवि का सम्मान सभी करते हैं।
मिश्र वाक्य- जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

(4)सरल वाक्य- लड़के ने अपना दोष मान लिया।
मिश्र वाक्य- लड़के ने माना कि दोष उसका है।

(5)सरल वाक्य- राम मुझसे घर आने को कहता है।
मिश्र वाक्य- राम मुझसे कहता है कि मेरे घर आओ।

(6)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ खेलूँ।

(7)सरल वाक्य- आप अपनी समस्या बताएँ।
मिश्र वाक्य- आप बताएँ कि आपकी समस्या क्या है ?

(8)सरल वाक्य- मुझे पुरस्कार मिलने की आशा है।
मिश्र वाक्य- आशा है कि मुझे पुरस्कार मिलेगा।

(9)सरल वाक्य- महेश सेना में भर्ती होने योग्य नहीं है।
मिश्र वाक्य- महेश इस योग्य नहीं है कि सेना में भर्ती हो सके।

(10)सरल वाक्य- राम के आने पर मोहन जाएगा।
मिश्र वाक्य- जब राम जाएगा तब मोहन आएगा।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(11)सरल वाक्य- मेरे बैठने की जगह कहाँ है ?
मिश्र वाक्य- वह जगह कहाँ है जहाँ मैं बैठूँ ?

(12)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ व्यापार करूँ।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष घोषित किया।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे बताओ कि तुम्हारा जन्म कब और कहाँ हुआ था।
सरल वाक्य- तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।

(3)मिश्र वाक्य- जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।
सरल वाक्य- परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।

(4)मिश्र वाक्य- ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही घण्टा बजा।
सरल वाक्य- मेरे वहाँ पहुँचते ही घण्टा बजा।

(5)मिश्र वाक्य- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा।
सरल वाक्य- पानी न बरसने पर सूखा पड़ जाएगा।

(6)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष बताया।

(7)मिश्र वाक्य- यह निश्चित नहीं है कि वह कब आएगा?
सरल वाक्य- उसके आने का समय निश्चित नहीं है।

(8)मिश्र वाक्य- जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा।
सरल वाक्य- तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा।

(9)मिश्र वाक्य- जहाँ राम रहता है वहीं श्याम भी रहता है।
सरल वाक्य- राम और श्याम साथ ही रहते हैं।

(10)मिश्र वाक्य- आशा है कि वह साफ बच जाएगा।
सरल वाक्य- उसके साफ बच जाने की आशा है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1) संयुक्त वाक्य- सूर्य निकला और कमल खिल गए।
मिश्र वाक्य- जब सूर्य निकला, तो कमल खिल गए।

(2) संयुक्त वाक्य- छुट्टी की घंटी बजी और सब छात्र भाग गए।
मिश्र वाक्य- जब छुट्टी की घंटी बजी, तब सब छात्र भाग गए।

(3)संयुक्त वाक्य- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा।
मिश्र वाक्य- यदि काम पूरा नहीं करोगे तो जुर्माना होगा।

(4)संयुक्त वाक्य- इस समय सर्दी है इसलिए कोट पहन लो।
मिश्र वाक्य- क्योंकि इस समय सर्दी है, इसलिए कोट पहन लो।

(5)संयुक्त वाक्य- वह मरणासन्न था, इसलिए मैंने उसे क्षमा कर दिया।
मिश्र वाक्य- मैंने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह मरणासन्न था।

(6)संयुक्त वाक्य- वक्त निकल जाता है पर बात याद रहती है।
मिश्र वाक्य- भले ही वक्त निकल जाता है, फिर भी बात याद रहती है।

(7)संयुक्त वाक्य- जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो बस चली जाएगी।
मिश्र वाक्य- यदि जल्दी तैयार नहीं होओगे तो बस चली जाएगी।

(8)संयुक्त वाक्य- इसकी तलाशी लो और घड़ी मिल जाएगी।
मिश्र वाक्य- यदि इसकी तलाशी लोगे तो घड़ी मिल जाएगी।

(9)संयुक्त वाक्य- सुरेश या तो स्वयं आएगा या तार भेजेगा।
मिश्र वाक्य- यदि सुरेश स्वयं न आया तो तार भेजेगा।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- वह उस स्कूल में पढ़ा जो उसके गाँव के निकट था।
संयुक्त वाक्य- वह स्कूल में पढ़ा और वह स्कूल उसके गाँव के निकट था।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे वह पुस्तक मिल गई है जो खो गई थी।
संयुक्त वाक्य- वह पुस्तक खो गई थी परन्तु मुझे मिल गई है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(3)मिश्र वाक्य- जैसे ही उसे तार मिला वह घर से चल पड़ा।
संयुक्त वाक्य- उसे तार मिला और वह तुरन्त घर से चल पड़ा।

(4)मिश्र वाक्य- काम समाप्त हो जाए तो जा सकते हो।
संयुक्त वाक्य- काम समाप्त करो और जाओ।

(5)मिश्र वाक्य- मुझे विश्वास है कि दोष तुम्हारा है।
संयुक्त वाक्य- दोष तुम्हारा है और इसका मुझे विश्वास है।

(6)मिश्र वाक्य- आश्चर्य है कि वह हार गया।
संयुक्त वाक्य- वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है।

(7)मिश्र वाक्य- जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
संयुक्त वाक्य- जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा।

कर्तृवाचक से कर्मवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)कर्तृवाचक वाक्य- लड़का रोटी खाता है।
कर्मवाचक वाक्य- लड़के से रोटी खाई जाती है।

(2)कर्तृवाचक वाक्य- तुम व्याकरण पढ़ाते हो।
कर्मवाचक वाक्य- तुमसे व्याकरण पढ़ाया जाता है।

(3)कर्तृवाचक वाक्य- मोहन गीत गाता है।
कर्मवाचक वाक्य- मोहन से गीत गाया जाता है।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य में परिवर्तन

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हम पढ़ चुके हैं। उनका भी रूपान्तरण हो सकता है। एक वाक्य का उदाहरण देखिए-
विधानवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।
निषेधवाचक- अनुपमा पुस्तक नहीं पढ़ेगी।
प्रश्नवाचक- क्या अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी ?
विस्मयवाचक- अरेअनुपमा पुस्तक पढ़ेगी। !
आज्ञावाचक- अनुपमा, पुस्तक पढ़ो।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

इच्छावाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ती होगी।
संकेतवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़े तो .....

विधिवाचक से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)विधिवाचक वाक्य- वह मुझसे बड़ा है।
निषेधवाचक- मैं उससे बड़ा नहीं हूँ।

(2)विधिवाचक वाक्य- अपने देश के लिए हरएक भारतीय अपनी जान देगा।
निषेधवाचक वाक्य- अपने देश के लिए कौन भारतीय अपनी जान न देगा ?

विधानवाचक वाक्य से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) विधानवाचक वाक्य- यह प्रस्ताव सभी को मान्य है।
निषेधवाचक- इस प्रस्ताव के विरोधाभास में कोई नहीं है।

(2) विधानवाचक वाक्य- तुम असफल हो जाओगे।
निषेधवाचक- तुम सफल नहीं हो पाओगे।

(3) विधानवाचक वाक्य- शेरशाह सूरी एक बहादुर बादशाह था।
निषेधवाचक- शेरशाह सूरी से बहादुर कोई बादशाह नहीं था।

(4) विधानवाचक वाक्य- रमेश सुरेश से बड़ा है।
निषेधवाचक- रमेश सुरेश से छोटा नहीं है।

(5) विधानवाचक वाक्य- शेर गुफा के अन्दर रहता है।
निषेधवाचक- शेर गुफा के बाहर नहीं रहता है।

(6) विधानवाचक वाक्य- मुझे सन्देह हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।
निषेधवाचक- मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।

(7) विधानवाचक वाक्य- मुगल शासकों में अकबर श्रेष्ठा था।
निषेधवाचक- मुगल शासकों में अकबर से बढ़कर कोई नहीं था।

निश्चयवाचक वाक्य से प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) निश्चयवाचक- आपका भाई यहाँ नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- आपका भाई कहाँ है ?

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(2) निश्चयवाचक- किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।
प्रश्नवाचक- किस पर भरोसा किया जाए ?

(3) निश्चयवाचक- गाँधीजी का नाम सबने सुन रखा है।
प्रश्नवाचक- गाँधीजी का नाम किसने नहीं सुना?

(4) निश्चयवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास कहाँ है?

(5) निश्चयवाचक- तुम किसी न किसी तरह उत्तीर्ण हो गए।
प्रश्नवाचक- तुम कैसे उत्तीर्ण हो गए?

(6) निश्चयवाचक- अब तुम बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो।
प्रश्नवाचक- क्या तुम अब बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो?

(7) निश्चयवाचक- यह एक अनुकरणीय उदाहरण है।
प्रश्नवाचक- क्या यह अनुकरणीय उदाहरण नहीं हैं?

विस्मयादिबोधक वाक्य से विधानवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)विस्मयादिबोधक- वाह!कितना सुन्दर नगर है !
विधानवाचक वाक्य- बहुत ही सुन्दर नगर है!

(2) विस्मयादिबोधक- काशमैं जवान होता। !
विधानवाचक वाक्य- मैं चाहता हूँ कि मैं जवान होता।

(3) विस्मयादिबोधक- अरेतुम फेल हो गए। !
विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे फेल होने से आश्चर्य हो रहा है।

(4) विस्मयादिबोधक- ओ होतुम खूब आए। !
विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे आगमन से अपार ख़ुशी है।

(5) विस्मयादिबोधक- कितना क्रूर!
विधानवाचक वाक्य- वह अत्यन्त क्रूर है।

(6) विस्मयादिबोधक- क्या!मैं भूल कर रहा हूँ !
विधानवाचक वाक्य- मैं तो भूल नहीं कर रहा।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(7) विस्मयादिबोधक- हाँ हाँसब ठीक है। !
विधानवाचक वाक्य- मैं अपनी बात का अनुमोदन करता हूँ।

वाक्य रचना के कुछ सामान्य नियम

''व्याकरण सिंद्ध पदों को मेल के अनुसार यथाक्रम रखने को ही-'वाक्यरचना-' कहते है।''

वाक्य का एक पद दूसरे से लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि का जो संबंध रखता है, उसे ही 'मेल' कहते हैं। जब वाक्य में दो पद एक ही लिंगहों तब वे आपस में मेल काल और नियम के-पुरुष-वचन-, समानता या सादृश्य रखनेवाले कहे जाते हैं।

निर्दोष वाक्य लिखने के कुछ नियम हैं। इनकी सहायता से शुद्ध वाक्य लिखने का प्रयास किया जा सकता है।
सुन्दर वाक्यों की रचना के लिए (क) क्रम (Order) (ख) अन्वय (Co-ordination) और (ग) प्रयोग (Use) से सम्बद्ध कुछ सामान्य नियमों का ज्ञान आवश्यक है।

(क) क्रम (order)

किसी वाक्य के सार्थक शब्दों को यथास्थान रखने की क्रिया को 'क्रम' अथवा 'पदक्रम' कहते हैं। इसके कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं-

(i) हिंदी वाक्य के आरम्भ में कर्ता, मध्य में कर्म और अन्त में क्रिया होनी चाहिए।
जैसे- मोहन ने भोजन किया।
यहाँ कर्ता 'मोहन', कर्म 'भोजन' और अन्त में क्रिया 'क्रिया' है।

(ii) उद्देश्य या कर्ता के विस्तार को कर्ता के पहले और विधेय या क्रिया के विस्तार को विधेय के पहले रखना चाहिए। जैसे- अच्छे लड़के धीरेधीरे पढ़ते हैं।-

(iii) कर्ता और कर्म के बीच अधिकरण, अपादान, सम्प्रदान और करण कारक क्रमशः आते हैं।
जैसे- मुरारि ने घर में सम्प्रदा) श्याम के लिए (अपादान) आलमारी से (अधिकरण)न (करण) हाथ से (पुस्तक निकाली।

(iv) सम्बोधन आरम्भ में आता है।
जैसे- हे प्रभु, मुझपर दया करें।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(v) विशेषण विशेष्य या संज्ञा के पहले आता है।
जैसे- मेरी उजली कमीज कहीं खो गयी।

(vi) क्रियाविशेषण क्रिया के पहले आता है।
जैसे- वह तेज दौड़ता है।

(vii) प्रश्नवाचक पद या शब्द उसी संज्ञा के पहले रखा जाता है, जिसके बारे में कुछ पूछा जाय।
जैसे- क्या मोहन सो रहा है ?

टिप्पणी- यदि संस्कृत की तरह हिंदी में वाक्यरचना के साधारण क्रम का पालन न किया जाय, तो इससे कोई क्षति अथवा अशुद्धि नहीं होती। फिर भी, उसमें विचारों का एक तार्किक क्रम ऐसा होता है, जो एक विशेष रीति के अनुसार एकदूसरे के पीछे आता है।-

क्रमसंबंधी कुछ अन्य बातें-
(1) प्रश्नवाचक शब्द को उसी के पहले रखना चाहिए, जिसके विषय में मुख्यतः प्रश्न किया जाता है।
जैसे- वह कौन व्यक्ति है ?
वह क्या बनाता है ?

(2) यदि पूरा वाक्य ही प्रश्नवाचक हो तो ऐसे शब्द वाक्यारंभ में रखना चाहिए। (प्रश्नसूचक)
जैसे- क्या आपको यही बनना था ?

(3) यदि 'न' का प्रयोग आदर के लिए आए तो प्रश्नवाचक का चिह्न नहीं आएगा और 'न' का प्रयोग अंत में होगा।
जैसे- आप बैठिए न।
आप मेरे यहाँ पधारिए न।

(4) यदि 'न' क्या का अर्थ व्यक्त करे तो अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग करना चाहिए और 'न' वाक्यान्त में होगा।
जैसे- वह आज कल स्वस्थ है न-?
आप वहाँ जाते हैं न ?

(5) पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया के पहले आती है।
जैसे- वह खाकर विद्यालय जाता है।
शिक्षक पढ़ाकर घर जाते हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(6) विस्मयादिबोधक शब्द प्रायः वाक्यारंभ में आता है।

जैसे- वाह आपने भी खूब कहा है। !

ओह जा रहा है। यह दर्द सहा नहीं !

(ख(मेल) अन्वय (

'अन्वय' में लिंग, वचन, पुरुष और काल के अनुसार वाक्य के विभिन्न पदों दूसरे से सम्बन्ध -का एक (शब्दों) या मेल दिखाया जाता है। यह मेल कर्ता और क्रिया का, कर्म और क्रिया का तथा संज्ञा और सर्वनाम का होता हैं।

कर्ता और क्रिया का मेल

(i) यदि कर्तृवाचक वाक्य में कर्ता विभक्तिरहित है, तो उसकी क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होंगे।

जैसे- करीम किताब पढ़ता है।

सोहन मिठाई खाता है।

रीता घर जाती है।

(ii) यदि वाक्य में एक ही लिंग, वचन और पुरुष के अनेक विभक्तिरहित कर्ता हों और अन्तिम कर्ता के पहले 'और' संयोजक आया हो, तो इन कर्ताओं की क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी।

जैसे- मोहन और सोहन सोते हैं।

आशा, उषा और पूर्णिमा स्कूल जाती हैं।

(iii) यदि वाक्य में दो भिन्न लिंगों के कर्ता हों और दोनों द्वन्द्वसमास के अनुसार प्रयुक्त हों तो उनकी क्रिया पुंलिंग बहुवचन में होगी।

जैसे- नरनारी गये।-

राजारानी आये।-

स्त्रीपुरुष मिले।-

मातापिता बैठे हैं।-

(iv) यदि वाक्य में दो भिन्न भिन्न विभक्तिरहित एकवचन कर्ता हों और दोनों के बीच-'और' संयोजक आये, तो उनकी क्रिया पुंलिंग और बहुवचन में होगी।

जैसे- राधा और कृष्ण रास रचते हैं।

बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(v) यदि वाक्य में दोनों लिंगों और वचनों के अनेक कर्ता हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी और उनका लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा।
जैसे- एक लड़का, दो बूढ़े और अनेक लड़कियाँ आती हैं।
एक बकरी, दो गायें और बहुतसे बैल मैदान में चरते हैं।-

(vi) यदि वाक्य में अनेक कर्ताओं के बीच विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय 'या' अथवा 'वा' रहे तो क्रिया अन्तिम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगी।
जैसे- घनश्याम की पाँच दरियाँ वा एक कम्बल बिकेगा।
हरि का एक कम्बल या पाँच दरियाँ बिकेंगी।
मोहन का बैल या सोहन की गायें बिकेंगी।

(vii) यदि उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष एक वाक्य में कर्ता बनकर आयें तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी।
जैसे- वह और हम जायेंगे।
हरि, तुम और हम सिनेमा देखने चलेंगे।
वह, आप और मैं चलूँगा।
गुरूजी का मत है कि वाक्य में पहले मध्यमपुरुष प्रयुक्त होता है, उसके बाद अन्यपुरुष और अन्त में उत्तमपुरुष।
जैसे- तुम, वह और मैं जाऊँगा।

कर्म और क्रिया का मेल
(i) यदि वाक्य में कर्ता 'ने' विभक्ति से युक्त हो और कर्म की 'को' विभक्ति न हो, तो उसकी क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगी।
जैसे- आशा ने पुस्तक पढ़ी।
हमने लड़ाई जीती।
उसने गाली दी। मैंने रूपये दिये।
तुमने क्षमा माँगी।

(ii) यदि कर्ता और कर्म दोनों विभक्तिचिह्नों से युक्त हों, तो क्रिया सदा एकवचन पुंलिंग और अन्यपुरुष में होगी।
जैसे- मैंने कृष्ण को बुलाया।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

तुमने उसे देखा।
स्त्रियों ने पुरुषों को ध्यान से देखा।

(iii) यदि कर्ता 'को' प्रत्यय से युक्त हो और कर्म के स्थान पर कोई क्रियार्थक संज्ञा आए तो क्रिया सदा पुंलिंग, एकवचन और अन्यपुरुष में होगी।
जैसे- तुम्हें पुस्तक पढ़ना नहीं आता। (तुमको)
अलका को रसोई बनाना नहीं आता।
उसे समझकर बात करना नहीं आता। (उसको)

(iv) यदि एक ही लिंगवचन के अनेक प्राणिवाचक विभक्तिरहित कर्म एक साथ आएँ-, तो क्रिया उसी लिंग में बहुवचन में होगी।
जैसे- श्याम ने बैल और घोड़ा मोल लिए।
तुमने गाय और भैंस मोल ली।

(v) यदि एक ही लिंगअप्राणिवाचक अप्रत्यय कर्म एक साथ एकवचन में आयें-अनेक प्राणिवाचक वचन के-, तो क्रिया भी एकवचन में होगी।
जैसे- मैंने एक गाय और एक भैंस खरीदी।
सोहन ने एक पुस्तक और एक कलम खरीदी।
मोहन ने एक घोड़ा और एक हाथी बेचा।

(vi) यदि वाक्य में भिन्न आयें और वे भिन्न लिंग के अनेक प्रत्यय कर्म-'और' से जुड़े हों, तो क्रिया अन्तिम कर्म के लिंग और वचन में होगी।
जैसे- मैंने मिठाई और पापड़ खाये।
उसने दूध और रोटी खिलाई।

संज्ञा और सर्वनाम का मेल
(i) सर्वनाम में उसी संज्ञा के लिंग और वचन होते हैं, जिसके बदले वह आता है; परन्तु कारकों में भेद रहता है।
जैसे- प्रखर ने कहा कि मैं जाऊँगा।
शीला ने कहा कि मैं यहीं रूकूँगी।

(ii) संपादक, ग्रंथकार, किसी सभा का प्रतिनिधि और बड़े बड़े अधिकारी अपने लिए-'मैं' की जगह 'हम' का प्रयोग करते हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

जैसे- हमने पहले अंक में ऐसा कहा था।
हम अपने राज्य की सड़कों को स्वच्छ रखेंगे।

(iii) एक प्रसंग में किसी एक संज्ञा के बदले पहली बार जिस वचन में सर्वनाम का प्रयोग करे, आगे के लिए भी वही वचन रखना उचित है।
जैसे- अंकित ने संजय से कहा कि मैं तुझे कभी परेशान नहीं करूँगा।
तुमने हमारी पुस्तक लौटा दी हैं।
मैं तुमसे बहुत नाराज नहीं हूँ। (अशुद्ध वाक्य है।(

पहली बार अंकित के लिए 'मैं' का और संजय के लिए 'तू' का प्रयोग हुआ है तो अगली बार भी 'तुमने' की जगह 'तूने', 'हमारी' की जगह 'मेरी' और 'तुमसे' की जगह 'तुझसे' का प्रयोग होना चाहिए :
अंकित ने संजय से कहा कि मैं तुझे कभी परेशान नहीं करूँगा। तूने मेरी पुस्तक लौटा दी है। मैं तुझसे बहुत नाराज नहीं हूँ। (शुद्ध वाक्य(

(iv) संज्ञाओं के बदले का एक सर्वनाम वही लिंग और वचन लेगा जो उनके समूह से समझे जाएँगे।
जैसे- शरद् और संदीप खेलने गए हैं; परन्तु वे शीघ्र ही आएँगे।
श्रोताओं ने जो उत्साह और आनंद प्रकट किया उसका वर्णन नहीं हो सकता।

(v) 'तू' का प्रयोग अनादर और प्यार के लिए होता है।
जैसे- रे नृप बालक, कालबस बोलत तोहि न संभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु विदित सकल संसार।। (गोस्वामी तुलसीदास(

तोहितुझसे -
अरे मूर्ख तू यह क्या कर रहा है !?(अनादर के लिए(
अरे बेटा, तू मुझसे क्यों रूठा है ? (प्यार के लिए(
तू धार है नदिया की, मैं तेरा किनारा हूँ।

(vi) मध्यम पुरुष में सार्वनामिक शब्द की अपेक्षा अधिक आदर सूचित करने लिए किसी संज्ञा के बदले ये प्रयुक्त होते हैं-
(a) पुरुषों के लिए : महाशय, महोदय, श्रीमान्, महानुभाव, हुजूर, हुजुरवाला, साहब, जनाब इत्यादि।
(b) स्त्रियों के लिए : श्रीमती, महाशया, महोदया, देवी, बीबीजी आदि।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(vii) आदरार्थ अन्य पुरुष में 'आप' के बदले ये शब्द आते हैं-

(a) पुरुषों के लिए : श्रीमान्, मान्यवर, हुजूर आदि।

(b) स्त्रियों के लिए : श्रीमती, देवी आदि।

संबंध और संबंधी में मेल

(1) संबंध के चिह्न में वही लिंगवचन होते हैं-, जो संबंधी के।

जैसे- रामू का घर

श्यामू की बकरी

(2) यदि संबंधी में कई संज्ञाएँ बिना समास के आए तो संबंध का चिह्न उस संज्ञा के अनुसार होगा, जिसके पहले वह रहेगा।

जैसे- मेरी माता और पिता जीवित हैं। (बिना समास के)

मेरे माता(समास होने पर) पिता जीवित है।-

(गवाक्यगत प्रयोग (

वाक्य का सारा सौन्दर्य पदों अथवा शब्दों के समुचित प्रयोग पर आश्रित है। पदों के स्वरूप और औचित्य पर ध्यान रखे बिना शिष्ट और सुन्दर वाक्यों की रचना नहीं होती। प्रयोगसम्बन्धी कुछ आवश्यक निर्देश --निम्नलिखित हैं

कुछ आवश्यक निर्देश

(i) एक वाक्य से एक ही भाव प्रकट हो।

(ii) शब्दों का प्रयोग करते समय व्याकरणसम्बन्धी नियमों का पालन हो।-

(iii) वाक्यरचना में अधूरे वाक्यों को नहीं रखा जाये।

(iv) वाक्यसम्बन्धी शिष्टता हो।-ता और प्रयुक्त शब्दों में शैलीयोजना में स्पष्ट-

(v) वाक्य में शब्दों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध हो। तात्पर्य यह कि वाक्य में सभी शब्दों का प्रयोग एक ही काल में, एक ही स्थान में और एक ही साथ होना चाहिए।

(vi) वाक्य में ध्वनि और अर्थ की संगति पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(vii) वाक्य में व्यर्थ शब्द न आने पायें।

(viii) वाक्यतहाँ मुहावरों और कहावतों का भी प्रयोग हो।-योजना में आवश्यकतानुसार जहाँ-

(ix) वाक्य में एक ही व्यक्ति या वस्तु के लिए कहीं 'यह' और कहीं 'वह', कहीं 'आप' और कहीं 'तुम', कहीं 'इसे' और कहीं 'इन्हें', कहीं 'उसे' और कहीं 'उन्हें', कहीं 'उसका' और कहीं 'उनका', कहीं 'इनका' और कहीं 'इसका' प्रयोग नहीं होना चाहिए।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(x) वाक्य में पुनरुक्तिदोष नहीं होना चाहिए। शब्दों के प्रयोग में औचित्य पर ध्यान देना चाहिए।

(xi) वाक्य में अप्रचलित शब्दों का व्यवहार नहीं होना चाहिए।

(xii) परोक्ष कथन)Indirect narration) हिन्दी भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं है। यह वाक्य अशुद्ध है - उसने कहा कि उसे कोई आपत्ति नहीं है। इसमें'उसे' के स्थान पर 'मुझे' होना चाहिए।

अन्य ध्यातव्य बातें

(1) 'प्रत्येक', 'किसी', 'कोई' का प्रयोग- ये सदा एकवचन में प्रयुक्त होते है, बहुवचन में प्रयोग अशुद्ध है। जैसे-

प्रत्येक- प्रत्येक व्यक्ति जीना चाहता है।

प्रत्येक पुरुष से मेरा निवेदन है।

कोई- मैंने अब तक कोई काम नहीं किया।

कोई ऐसा भी कह सकता है।

किसी- किसी व्यक्ति का वश नहीं चलता।

किसी का ऐसा कहना है।

किसी ने कहा था।

टिप्पणी- 'कोई' और 'किसी' के साथ 'भी' का प्रयोग अशुद्ध है। जैसेकोई भी होगा -, तब काम चल जायेगा। यहाँ 'भी' अनावश्यक है। कोई 'कोऽपि' का तद्भव है। 'कोई' और 'किसी' में 'भी' का भाव वर्त्तमान है।

(2) 'द्वारा' का प्रयोग- किसी व्यक्ति के माध्यम)through) से जब कोई काम होता है, तब संज्ञा के बाद 'द्वारा' का प्रयोग होता है; वस्तु के बाद (संज्ञा)'से' लगता है।

जैसे- सुरेश द्वारा यह कार्य सम्पत्र हुआ।

युद्ध से देश पर संकट छाता है।

(3) 'सब' और 'लोग' का प्रयोग- सामान्यतः दोनों बहुवचन हैं। पर कभी कभी-'सब' का समुच्चयरूप में - एकवचन में भी प्रयोग होता है।

जैसे- तुम्हारा सब काम गलत होता है।

यदि काम की अधिकता का बोध हो तो 'सब' का प्रयोग बहुवचन में होगा।

जैसे- सब यही कहते हैं।

हिंदी में 'सब' समुच्चय और संख्यादोनों का बोध कराता है। -

'लोग' सदा बहुवचन में प्रयुक्त होता है।

जैसे- लोग अन्धे नहीं हैं। लोग ठीक ही कहते हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

कभी कभी-'सब लोग' का प्रयोग बहुवचन में होता है। 'लोग' कहने से कुछ व्यक्तियों का और 'सब लोग' कहने से अनगिनत और अधिक व्यक्तियों का बोध होता है। जैसे-
सब लोगों का ऐसा विचार है। सब लोग कहते है कि गाँधीजी महापुरुष थे।

(4) व्यक्तिवाचक संज्ञा और क्रिया का मेल- यदि व्यक्तिवाचक संज्ञा कर्ता है, तो उसके लिंग और वचन के अनुसार क्रिया के लिंग और वचन होंगे।
जैसे- कशी सदा भारतीय संस्कृति का केन्द्र रही है।
यहाँ कर्ता स्त्रीलिंग है।
पहले कलकत्ता भारत की राजधानी था।
यहाँ कर्ता पुंलिंग है।
उसका ज्ञान ही उसकी पूँजी था।
यहाँ कर्ता पुंलिंग है।

(5) समयसूचक समुच्चय का प्रयोग- "तीन बजे हैं। आठ बजे हैं।" इन वाक्यों में तीन और आठ बजने का बोध समुच्चय में हुआ है।

(6) 'पर' और 'ऊपर' का प्रयोग- 'ऊपर' और 'पर' व्यक्ति और वस्तु दोनों के साथ प्रयुक्त होते हैं। किन्तु 'पर' सामान्य ऊँचाई का और 'ऊपर' विशेष ऊँचाई का बोधक है।
जैसे- पहाड़ के ऊपर एक मन्दिर है। इस विभाग में मैं सबसे ऊपर हूँ।
हिंदी में 'ऊपर' की अपेक्षा 'पर' का व्यवहार अधिक होता है। जैसे-
मुझपर कृपा करो। छत पर लोग बैठे हैं। गोप पर अभियोग है। मुझपर तुम्हारे एहसान हैं।

(7) 'बाद' और 'पीछे' का प्रयोग- यदि काल का अन्तर बताना हो, तो 'बाद' का और यदि स्थान का अन्तर सूचित करना हो, तो 'पीछे' का प्रयोग होता है।
जैसे- उसके बाद वह आयाकाल का अन्तर। -
मेरे बाद इसका नम्बर आयाअन्तर। काल का -
गाड़ी पीछे रह गयीस्थान का अन्तर। -
मैं उससे बहुत पीछे हूँस्थान का अन्तर। -

(8) (कनए (, नये, नई, नयी का शुद्ध प्रयोग- जिस शब्द का अन्तिम वर्ण 'या' है उसका बहुवचन 'ये' होगा। 'नया' मूल शब्द है, इसका बहुवचन 'नये' और स्त्रीलिंग 'नयी' होगा।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(खगए (, गई, गये, गयी का शुद्ध प्रयोग- मूल शब्द 'गया' है। उपरिलिखित नियम के अनुसार 'गया' का बहुवचन 'गये' और स्त्रीलिंग 'गयी' होगा।

(गहुये (, हुए, हुयी, हुई का शुद्ध प्रयोग- मूल शब्द 'हुआ' है, एकवचन में। इसका बहुवचन होगा 'हुए'; 'हुये' नहीं 'हुए' का स्त्रीलिंग 'हुई' होगा; 'हुयी' नहीं।

(घकिए (, किये, का शुद्ध प्रयोग- 'किया' मूल शब्द है; इसका बहुवचन 'किये' होगा।

(ड़लिए (, लिये, का शुद्ध प्रयोग- दोनों शुद्ध रूप हैं। किन्तु जहाँ अव्यय व्यवहृत होगा वहाँ 'लिए' आयेगा। जैसे- मेरे लिए उसने जान दी। क्रिया के अर्थ में 'लिये' का प्रयोग होगा; क्योंकि इसका मूल शब्द 'लिया' है।

(चचाहिये (, चाहिए का शुद्ध प्रयोग- 'चाहिए' अव्यय है। अव्यय विकृत नहीं होता। इसलिए 'चाहिए' का प्रयोग शुद्ध है; 'चाहिये' का नहीं। 'इसलिए' के साथ भी ऐसी ही बात है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090